Academe *Journal of Education & Psychology*
Volume-2, Issue-2, Year-2012 (July- December)
PP: 13-16 *ISSN No: 2249-040X*

भारतीय आदर्श की प्रतिमा नारी–आधुनिक हिन्दी काव्य के संदर्भ में

किरण शर्मा

एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, डी.ए.वी. कॉलेज फॉर गर्ल्ज़, यमुनानगर

जो करता है तेरी छवि में,

अपना जीवन तन्मय लीन,

वही अमर हो जाता सुन्दर

हो जाता है सीमाहीन ।[1]

परिवर्तन युग में नारी–भावना को दो रूपों में प्रस्तुत किया है – सीधे ढंग से अर्थात् नारी को लेकर तत्संबन्धी दृष्टिकोण का स्पष्टीकरण या प्रतीकात्मक ढंग से अर्थात् किसी अमानवीय वस्तु को नारी के रूप में देखकर भावाभिव्यक्ति । परिवर्तन युग का कवि आदर्शवादी है । आदर्शवादी होने के कारण कवि ने नारी को महान एवम् गौरवमय रूप में देखा है । उसे उसके सौन्दर्य से प्रेम है –

"स्नेहमयी सुन्दरतामयि

तुम्हारे रोम–रोम में नारि ।

मुझे है स्नेह अपार ।"[2]

कवि नारी की कोमलता, सुकुमारता, उसकी मुस्कान की आभा तथा लज्जाशीलता पर मुग्ध है । उस महामाया–रूपिणी नारी का अक्षय सौन्दर्य निरन्तर परिवर्तित होता जाता है, इसलिए कवि छवि की अकथ कथा को लिखवाने में अपने को असमर्थ पाता है ।

"छवि की अकथ कथा लिख पायें

कब कवि के ओछे अक्षर"[3]

नारी सौन्दर्य–शुभ संदेश वाहक ही नहीं, तृप्ति और शांति भी है । नारी स्वयं विध्वंस के पश्चात् अवसाद का अनुभव करती है और जगत को अपनी करूणा से पुनः नवजीवनप्रदान करती है । जीवन में नई चतना का संचार करके वह प्राणदायिनी के रूप में आती है । इतना ही नहीं वह वरदान देने वाली देवी भी है । जब अनेक प्रकार के संकटों से दुखी होकर मनुष्य उसको याद करते हैं तब वह अपना वरदहस्त बढ़ा कर आशीर्वाद देती है । वास्तव में नारी शक्ति एक कल्याणी शक्ति है । उसकी शुभ दृष्टि भुक्ति–मुक्ति प्रदायिनी है और उसी के कारण सृष्टि अमर है । उसके प्रताप में सत्य, शिव और सुन्दर का संयोग है । वह उदार बनकर समस्त लोक में मंगल को भर देती है और उसके स्नेह से पृथ्वी आकाश धुल जाते हैं । वह गंगा के समान पवित्र और त्रिभुवन को पवित्र करने वाली है । जहाँ उसका प्रवाह है वही तृप्ति है, उसी के तट पर तीर्थ है । उसके पावन, सरल स्नेह में स्नान करने के पश्चात् ज्ञान, ध्यान, पूजा, सेवा, व्रत, जप, तप दानादि की आवश्यकता नहीं रहती ।

"तेरा ही वरदान व्यथा को सुन्दरि, सुन्दर करता है,

मृत्यु अमरता बन जाती है, पीड़ा में रस भरता है ।"[4]

जब संसार अशुभ स्वपनों में सो जाता है तो उसे जगाती हैं । 'हाथ पकड़ कर जग को मार्ग दिखाती है । और

"मंगलमयि तेरे इंगित पर चलता है जब जग अनजान,

अनायास ही मिल जाता है उसको चिर दुर्लभ निर्वाण ।"[5]

वह असीम वात्सल्यमयी अंधकार से भयभीत प्राणों को हृदय से लगाकर आश्वासन प्रदान करती है । युग–युग से जीवन संग्राम में जूझते हुए श्रमित मानव की समस्त भ्रांतियों का नाश नारी की एक दृष्टि से हो जाता है, और वह चरम मुक्ति और शांति के रूप में उपस्थित होती है । वह धरती को सुख–समृद्धि रूपी खजाने से भर देती है । सूर्य और चन्द्रमा उसी शुभ रूप के ज्योति पुंज है । कवि ने तो नारी को भूतल पर स्वर्गीय किरण माना है । कवि कल्पना करता है कि जब अमृत घट ले जाने वाली मोहिनी शक्ति अमृत घड़े को स्वर्ग में लेकर जा रही थी तब थोड़ा सा अमृत छलक कर मर्त्य लोक में गिर पड़ा और वह नारी रूप में परिवर्तित हो गया स्वर्ग देखता ही रह गया । इस प्रकार जब वह स्वर्गीय शक्ति मर्त्यलोक में आती है तो असीमता को सीमा में लय कर लेती है । इसीलिए उसका रूप लघु तथा ससीम होने पर भी अनंत है –

"अमर लोक से उतर मर्त्य जग में,

कोमल पग पर धरती है,

ममतामयि, अपनी असीमता,

सीमा में लय करती है ।"[6]

नारी के गुणों के आकर्षण में बंधा कवि यहीं नही रूक जाता । नारी को शक्ति के रूप देखते हुए वह दार्शनिक हो उठा है । उसका दार्शनिक आदर्शवाद नारी को एक विराट् रूप प्रदान कर देता है । नारी को कवि ने अलौकिक शक्ति का अवतार माना है । उस दैवी शक्ति के स्वरूप का चित्रण करता हुए कवि कहता है कि उसका विस्तार अमापनीय है ।

आधुनिक कवि ने नारी के शक्ति रूप में कला का समन्वय देखा है । कविवर रवीन्द्र ने लिखा था – "जब विधाता पुरूष का निर्माण कर रहा था तब वह एक स्कूल मास्टर था और उसके बस्ते में उपदेश और सिद्धान्त भरे हुए थे, किन्तु जब वह नारी का निर्माण करने के लिए उद्यत हुआ तो वह सहसा एक कलाकार हो गया और उसके हाथ में केवल रंग और तूली थी ।"[7] When man was being made the creator was a school-master, his bag full of commandents and principles but when he came to woman. He turned an artist with only his brush and paint".

देवियों के रूप में कला की सात्विक विवेचना करता हुआ कवि कहता है – "कला अपने नाम से ही नारी स्वभाव की सूचना देती है, उसकी कोमलता और विकास में महिलाओं की प्रकृति है ।"[8]

नारी के प्रेयसी और प्रणयिनी रूप के दर्शन छायावादी काव्य में होते हैं । "प्रेयसी पुरूष के सपने की प्रतिमा होने के साथ अभिलाषा की प्यास भी है ।"[9] कवि ने इसका प्रमाण प्रकृति के कार्य–कलापों में पाया है –

"तुम एक अमर सन्देश बनो

मैं मन्त्र मुग्ध सा मौन रहूं ।

तुम कौतूहल सी मुस्का दो

जब मैं सुख दुख की बात कहूं ।"[10]

आधुनिक कवि ने प्रेयसी में न केवल स्नेह और करूणा तथा सौहादर्य और सहानुभूति ही पाई है वरन् अपार सौन्दर्य भी । किन्तु नारी जीवन की कहानी का अंत यही नहीं हो जाता । उसने अपने अश्रुजल के संकल्प से जीवन के समस्त स्वपनों को दान किया है । उसका अमर प्रश्न यही रहा है –

"मिलन का मुख भी विरह की ओर है,

मिलन पथ वह,

विरह जिसका छोर है ।"[11]

नारी जीवन का यह सत्य आधुनिक काव्य में राधा, गोपी, अनारकली, सीता आदि को लेकर उपस्थित होता है । आदर्शवादी कवि ने विरह में नारी–प्रेम की पूर्णता पाई है । जिस प्रकार अग्नि में तपकर स्वर्ण निखर आता है, उसी प्रकार वियोग की कसौटी पर प्रेम की उज्ज्वलता, दृढ़ता और वासना हीनता का विकास होता कवि ने देखा है नारी का प्रेयसी रूप जीवन के सूनेपन में विद्युत के समान और निराशा में आशा के समान प्रवेश करता है । इतना ही नहीं प्रेयसी जीवन की उलझनों की सहज सुलझन भी है उसकी अनुपस्थिति में भी स्नेह और गौरव का ध्यान मात्र जीवन की बाधाओं का सामना करने का बल प्रदान करती है ।

"तुम मेरे न हो सके,

फिर भी आज तुम्हारे बल पर निर्भय

मैं जीवन पथ पर बढ़ता

शत बाधाएं स्वीकार करूं ।"[12]

कवि का मानना है कि अपने अपार स्नेह और असीम करूणा को लेकर नारी जीवन की निकटतम वस्तु बन जाती है । नारी का पूर्ण वर्णन करने में कवि अपनी कल्पना, अनुभूति और भाषा को छोटा पाता है।

आधुनिक कवि के विचार में स्त्री जीवन का सत्य हे । वह नारी को केवल प्रेमिका के रूप में ही नहीं देखता, वरन् उसके रूप का अन्तर्मन से आदर करता है, जो गृह तथा कुटुम्ब के मध्य विकसित होता है अर्थात् पत्नी रूप । भारतीय अर्धांगिनी और गृहलक्ष्मी की गरिमा ने उसकी कल्पना को अत्यन्त परिष्कृत, सुरूचिपूर्ण तथा गौरवमय बना दिया है । कवि की भावना का झुकाव पूर्णतः गृह और परिवार संबंधी प्राचीन भारतीय पावन आदर्शों की ओर है ।

वैदिक ऋषियों की नारी भावना से आधुनिक कवि प्रभावित है, फलतः वह पत्नी को लक्ष्मी और अर्धांगिनी के रूप में देखता है । प्रेम नारी जीवन का प्रथम सत्य है और जब वे स्त्रियां प्रेम करना शुरू करती है तभी से उनका कर्त्तव्य भी शुरू हो जाता है । एकनिष्ठ और स्थिर प्रेम ही नारी को सती बना देता है । सतीत्व नारी की शक्ति है । आधुनिक कवि ने नारी को अर्धांगिनी और सहधर्मिणी के रूप में देखा है और उसे पति की शक्ति माना है । कवि के सम्मुख आदर्श देवताओं का है ।

"शिव शक्ति हीन शव हों

जो छोड़ दे भवानी ।"[13]

पूर्वजों के कथनों की प्रतिध्वनि करता हुआ कवि कहजा है कि वाह एक अनिवार्य आवश्यकता है क्योंकि उसके बिना मनुष्य अधूरा है और

"माता, भगिनी, पत्नी, कन्या, नारी ही नर कुल धन धन्या,

पत्नी रूप प्रकृत नारी का, मूल भूत इस फुलवारी का

जब मेरे सम्मुख आवेगा सहधर्मिणी उसे पावेगा ।"[14]

अर्धांगिनी के बिना पुरूष कोई कार्य सफलतापूर्वक कर सकता है । इसमें भी कवि को सन्देह है ।

कुटुम्ब की कल्पना में मुग्ध और नारी के जाया रूप के उपासक आधुनिक कवि के लिए माता रूप में नारी की कल्पना अत्यन्त आकर्षक हो गई है । चिर संचित आशा को लेकर नारी नीड का निर्माण करती है । वास्तव में मातृत्व में नारी जीवन का चरम विकास है और वात्सल्य में प्रेम की पूर्णता । आधुनिक कवि ने नारी में एक शाश्वत और विराट् मातृ–रूप पाया है जो अपनी दिव्य शक्तियों को लिए हुए सृष्टि का सृजन, पालन और कल्याण करता है ।

फलतः मानवता की मूर्ति, दया, क्षमा, ममता की आकर विश्व प्रेम की आधार करूणा की कालिंदी, स्वरूपा नारी के प्रेयसी, पत्नी और मातृरूप को कवि ने हमारे सम्मुख प्रस्तुत किया है । आधुनिक जन–जीवन दुखपूर्ण है । मनुष्य स्वार्थ और स्पर्धा से अंधे है, शारीरिक स्वास्थ्य विगलित है । मन चेतना

हीन है और स्वामत्व के कारण ज्ञान का नाश हो गया है। कवि इन दोषों को दूर करने के लिए, जगत में समता और एकता का प्रचार करने के लिए नारी के आदर्श रूप को ही पुकारता है ।

आधुनिक कवि ने प्रेम, त्याग, करूणा, सेवा शक्ति धैर्य और समता आदि गुणों का समावेश कराकर उसे एक उच्च्य सिंहासन पर प्रतिष्ठित किया है । अन्त में केवल इतना –

"मेरे सब विश्वास वहां है

नारी का सम्मान जहां है ।"[15]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. हरिकृष्ण प्रेमी – जादूगरनी– प्राक्कथन
2. सुमित्रानन्दनपन्त – पल्लवः 'नारी रूप', पृ. 16
3. हरिकृष्ण प्रेम – जादूगरनी, पृ. 20
4. वही, पृ. 77
5. वहीं, पृ. 61
6. वहीं, पृ. 24
7. सचिन सेन कृत 'पोलिटिकल फिलासफी ऑफ रवीन्द्रकुमार, में उद्धृत
8. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, चाबुक : कला और देवियां
9. भगवतीचरण वर्मा – मधुकण, स्वागत, पृ. 31
10. भगवतीचरण वर्मा – प्रेम संगीत, पृ. 27
11. राजेश्वर गुरू–शेफाली, पृ. 16
12. नरेन्द्र शर्मा – मिट्टी और फूल : किस विधि, पृ. 47
13. मैथिलीशरण गुप्त – स्वदेश संगीत – आर्या भार्या, पृ. 69
14. मैथिलीशरण गुप्त – अनथ, पृ0 52
15. वहीं, पृ. 29